पद १७१

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी.)

हंस: सोऽहं सोऽहं हंस:। अजपाजप सद्ब्रह्म प्रकासा। ध्यात जपत जो अजपामाला । सहज खेल जग स्थिति लय लीला । सिद्ध

मंत्र बल ज्योति प्रचंडा। दे उपदेस ज्ञानमार्तांडा ॥१॥ अस्त समय शिव नाचत प्यारा। शांभवगण शिव हर ललकारा। अखिलकोटि दीपक ब्रह्मांडा। ज्योतिरूप शिव चिन्मार्तांडा। निजानंद ईशभूति दायक अभेद शिव माणिक जय माणिक॥२॥ माणिक माणिक जय गुरु माणिक। माणिक माणिक शिव हर माणिक॥